टेलीविज़न धारावाहिकों में बाल विवाह प्रस्तुतीकरण: एक अध्ययन

डॉ. बलराम बिन्द

सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय,

जींद, हरियाणा

सारांश

टेलीविज़न धारावाहिकों ने सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुति करने काम कर रही है। सामाजिक समस्या समाज के लिए अभिशाप है। बाल विवाह, विधवा विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, सरकार व चिंतकों के लिए चुनौती बनी हुई है। बालिका बधू सीरियल, बाल विवाह पर केन्द्रित है। बाल विवाह होने से समाज वा लड़का या लड़की के क्या क्या समस्या बन जाती है, विविध पक्ष को रेखांकित करने के काम कर रही है।

बीज-शब्द: टीवी, सीरियल, बाल विवाह, पारिवारिक समस्या।

प्रस्तावना

टेलीविज़न धारावाहिकों के माध्यम से बाल विवाह पर केंद्रित धारावाहिक की 'बालिका बधू' की 21 जुलाई 2008 शुरुआत हुई। भारत में बाल विवाह बहुत लंबे समय से हमारे समाज में प्रचलित रहा है। नाबालिक लड़के और लड़की की शादी कर दी जाती है। बाल विवाह पूरे देश के लिए एक समस्या है लेकिन राजस्थान की पृष्ठभूमि में निर्मित धारावाहिक 'बालिका बधू' बाल बधू आनंदी की कहानी के माध्यम से समाज का यथार्थ चित्रण किया गया है। आठ साल की कच्ची उम्र में अपनी हम उम्र जगदीश से विवाहोपरांत आनंदी एक ऐसी नई दुनिया में प्रवेश करती है।

बाल विवाह की समस्या आज भी बनी हुई है बाल विवाह हुए लोगों से मिलने पर लोगों ने बताया कि जो भी पढ़े लिखे लोग जीवन जीना शुरू करते हैं उस समय तक बाल विवाह हुए सदस्य के पास तीन से चार बच्चे होते हैं। वह उन्हीं के भोजन और वस्त्र व्यवस्थित करने में जीवन भर लगा रहता है। बाल विवाह की परिस्थिति को देखा जाय तो देश में बाल-विवाह संबंधी, सबसे हालिया 2007-08 के जिला स्तरीय परिवार और

सुविधा सर्वेक्षण, यानी डीएलएचएस के आंकड़े बताते हैं कि बिहार में बीस से चौबीस साल की विवाहित महिलाओं में से 68.2 प्रतिशत महिलाओं की शादी 18 साल से कम उम्र में हो जाती है। राष्ट्रीय स्तर पर यह आंकड़ा 42.9 प्रतिशत है। राज्य के हर दूसरे घर में एक आनंदी रहती है। हालांकि बिहार के घरों में रहने वाली हर आनंदी कलर्स चैनल पर नजर आने वाली आनंदी के जैसे न तो अमीर और न ही लोकप्रिय। राज्य की आनंदियों को तो बस घर में घुट-घुटकर अपने जीवन को जीना होता है, जहां उसकी पीड़ा से न तो समाज को मतलब होता है और न ही उसके परिजनों को। हम बात कर रहे हैं बाल विवाह की। उपलब्ध जानकारी के अनुसार देश की 42 फ्रीसदी लड़कियां आनंदी बन जाती हैं यानी उनकी शादी 18 साल से पहले हो जाती है

विभिन्न राज्यों में अठारह वर्ष से कम आयु में विवाहित हो रही लड़कियों का प्रतिशत खतरनाक है-

- मध्य प्रदेश – 73 प्रतिशत
- राजस्थान – 68 प्रतिशत
- उत्तर प्रदेश – 64 प्रतिशत

• आन्ध्र प्रदेश – 71 प्रतिशत

• बिहार – 67 प्रतिशत

यूनीसेफ की “विश्व के बच्चों की स्थिति-2009”

रिपोर्ट के अनुसार 20-24 वर्ष आयु वर्ग की भारत की 47 प्रतिशत महिलाएं कानूनी रूप से मान्य आयु सीमा- 18 वर्ष से कम आयु में ब्याही गईं, जिसमें 56 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों से थीं। यूनीसेफ के अनुसार (विश्व के बच्चों की स्थिति-2009) विश्व के बाल विवाहों में से 40 प्रतिशत भारत में होते हैं।

टेलीविजन धारावाहिकों से समाज और परिवार की समस्या को दृश्यांकन करके समाज के समस्याओं की प्रस्तुति कर रहा है। भारत को गाँव का देश कहाँ जाता है। बाल विवाह गाँव में आज भी हर प्रदेश में देखने और सुनने को मिल रहा है। बालिका बधू सोप ओपेरा राजस्थान के रीति-रिवाज और रस्म को रेखांकित करती है। इस धारावाहिक के माध्यम से परिवार के रूप और उसके नियम कानून में रूढ़िवादिता दिखाने की प्रस्तुतीकरण कोशिश की गयी हैं। अंधविश्वासों व कुरीतियों वाले इस देश में 'बाल विवाह' एक कुरीति के रूप में आज भी समाज को पिछड़ेपन का शिकार बना रहा है। राजस्थान के ग्रामीण अंचलों व आदिवासियों में आज भी माँ के गर्भ में ही पल रहे बच्चे या बच्ची का विवाह तय कर दिया जाता है और तीन से चार वर्ष की उम्र में माता-पिता की गोद में बैठकर विवाह से अनभिज्ञ उन अबोध बच्चों के सात फेरे की रस्म पूरी कर दी जाती है।

कलर्स टी.वी. पर प्रसारित होने वाला धारावाहिक 'बालिका बधू' हमारे देश में बाल विवाह की भेंट चढ़ते कुछ ऐसे ही बच्चों की कहानी बयाँ करता है। यह धारावाहिक पूर्णतया राजस्थानी परिवारों व उनके रीति-रिवाजों जैसे घूँघट प्रथा, गौना प्रथा, तिरस्कृत विधवा का जीवन आदि का चित्रण करता है।

आनंदी गाँव के स्कूल में पढ़ने के लिए जाती है। “क्लास में जब उसके सहेली फूली के नाम पूछा जाता है तो कुछ लड़के यह बोलते हैं कि उसकी तो शादी हो गई

वह तो गाय के गोबर को पाथ रही होगी”¹... तब सब लड़के मिलकर ठहाका लगाने का काम करते हैं।

आनंदी से उसकी सहेली मिलती तो आनंदी पूछती है कि क्यों रे स्कूल को नहीं आई तो वह कहती है कि स्कूल तो आने को तो बहुत ही मन कर रहा है लेकिन क्या करूँ मेरे माँ कहती है कि शादी हो जाने के बाद स्कूल नहीं जाया जाता है। कौन सा पढ़ाई पढ़कर कलक्टर बनाना है। पढ़कर भी तो गोबर ही पाथना है। तब तक स्कूल की टीचर (संध्या) बातें सून लेती है, तब कहती है कि तेरा तो विवाह ही हुआ है ना पाँव में तो ताले नहीं पड़े हैं, पढ़ाई तो जीना सिखाती है।

बालिका बधू 22 जुलाई 2008 एपिसोड

बालिका बधू या बहुत से चैनलों पर चल रहे धारावाहिकों में घर में ही मंदिर होता है, अगर पूजा के समय कोई उपस्थित नहीं होता है तो उसे कभी - कभी हिंसा का शिकार होना पड़ता है।

दादी सा - आरती के लिए खुद ही पधारेगी या नाई से नेवता भेजवाना पड़ेगा”² इस तरह से परिवार जोड़ने के साथ उसे घर में कलह पैदा करने का स्थान कहा जा सकता है।

दादी सा - शादी की बात में सबसे पहले जाति खानदान देख कर शादी करनी चाहिए। भारतीय समाज में भले ही वह कितना प्रगतिशील है लेकिन उसकी शादी धर्म, जाति, गोत्र, खानदान आदि सभी देखकर ही किया जाता है।

बालिका बधू 23 जुलाई 2008 एपिसोड

V/O - बाल विवाह में शादी कर देने के बाद कम उम्र में माँ बन जाती है कुछ को मौत के शिकार होना पड़ता है

संध्या - आपने अपनी लड़की को 13 साल में विवाह किए थे। 14 वर्ष में माँ बन गई न वह बच्ची और ना ही उसका बच्चा, तो फिर से दूसरी बच्ची को बली चढ़ा दो”³ इस संवाद और गाँव के यथार्थ चित्रण में रूढ़िपन देखने को मिलता है”।

¹ -बालिका बधू जुलाई 21, 2008 एपिसोड

² बालिका बधू एपिसोड 2008 जुलाई 22

³ बालिका बधू, एपिसोड 2008 जुलाई 23

डाकिया - गाँव के विपरीत थोड़ा बोल दो गाँव के दहलीज के बाहर निकाल कर फेक देते हैं।

गाँव में सामाजिक रूप से किसी रूढ़ि के प्रति कट्टरता देखने को मिलती है। बाल विवाह के कारण कई समस्याएं जन्म लेती हैं। सबसे बड़ी समस्या यह है कि कम उम्र में गर्भधारण करने से एक तरफ लड़कियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तो दूसरी ओर उनके गर्भक्षमता में वृद्धि भी होती है। इसके अलावा बचपन की शादी के बाद जब ऐसे दंपति युवा होते हैं तब उनके इर्द-गिर्द की परिस्थिति में बदलाव हो चुका होता है और इसका परिणाम यह होता है कि घरेलू हिंसा और तलाक जैसी अमर्यादित घटनाएँ घटती हैं।

समाज में बहुत से रीति-रिवाज हैं। हर धर्म समुदाय जाति में रीति-रिवाज है, इस आधार पर भारत गाँवों का देश है। गाँव हर समाज के लोग निवास करते हैं।

संध्या - (मास्टरनी) तो गाँव में जाति और समाज का डर ही सब कुछ है गाँव के लड़की के सपने

डाकिया - जितना भी चुप रहो बुराई और फैलती है ... बुराई देर तक जिंदा रहती है तो समाज के रिवाज बन जाती है.... उसे लड़ना मतलब समाज से लड़ना है, पानी में रह कर मगरमच्छ से बैर नहीं करना होता है"⁴ गाँव और समाज की सामाजिक दृष्टिकोण देखने को मिलता है। परंपरा के प्रति कितनी रूढ़ि होती है, किसी हद तक गाँव के लोग जा सकते हैं।

क्षेत्रीय रीति-रिवाज

आज भी कई प्रदेशों में घूँघट प्रथा है। महिला घरों में काम करती हैं लेकिन बहुत संख्या में महिला घूँघट में ढकी रहती है। शादी में क्षेत्रीय गीत" बिंद का नाक खींचने की परंपरा है इस रीति-रिवाज को तो निभाना ही पड़ता है " हर प्रदेश में अलग परंपरा रही है कहीं दुल्हन के साथ दौरा में डेग डालना होता है, आदि परंपरा चली आ रही है।

24 जुलाई 2008 एपिसोड

V/O - सरकार बाल विवाह का रोकने के लिए बहुत से कानून बनाए हुए हैं लेकिन आज भी बाल विवाह कानून

बाल विवाह रोकने में असमर्थ है। किसी भी समस्या का समाधान करने के लिए संघर्ष ही एक रास्ता है। बाल विवाह रोकने के लिए शिक्षिका, आनंदी की शादी के रोकने के लिए मास्टरनी पुलिस स्टेशन जा रही है। आज एक शादी रुकेगी तो कल दस और शादी रुक जाएगी अगर ये शादी हो गई तो घुट- घुट के मर जाऊंगी और आगे बढ़ती है और प्रयास करती है।

संध्या - (मास्टरनी) मेरा नाम संध्या है बेलारिया गाँव में बाल विवाह शादी हो रही हैं।

दारोगा - आप विस्तार से बताएं ... किस लड़की की शादी हो रही है... बिना सबूत बहुत सालों से काम कर रहे हैं। एन वक्त पर गाँववाले बदल जाते हैं। इस सड़े रिवाज की बलि चढ़ने देंगे"⁵ कभी-कभी गाँव कानून सहयोग करना भी चाहता है तो समाज की बनावट इस कदर मजबूत है कि कानून भी कुछ काम नहीं कर पाता है।

शादी और अंजाम

बाल विवाह के रूप में समाज के एक कड़वे सच को बयाँ करने वाला 'बालिका वधू' आनंदी व जगदीश के रूप में उन सभी मासूम बच्चों के वैवाहिक जीवन का पटाक्षेप करता है, जो अब तक विवाह का अर्थ ही नहीं जानते हैं परंतु परिवार व समाज के दबाव के कारण वे इस बंधन में बँध गए हैं। बाल विवाह शादी होने से लड़के और लड़कियाँ समझ नहीं पाती हैं कि क्या हो रहा है। शादी होने के बाद लड़के और लड़की यह समझ नहीं पाते हैं कि आखिर हो क्या रहा है, जो कहता उसे मान लेते हैं ... मास्टरनी (संध्या) कहती है कि जो झूठ बोलता है उसकी नाक फूल जाती है... बेंडबाजा के आवाज सुन लेती है... पति के आवाज सुनने के बाद बहरी हो जाती है"⁶ इन सब बातों को सच मान लेती है। सत्य और असत्य में कोई फर्क नहीं कर पाती है।

बाल विवाह और कानून

V/O कानून के रखवाले ही शादी में जाकर विवाह कराने में सरकारी दारोगा भी साथ देता है... शादी को संपन्न कराता है... लड़के और लड़की का आशीर्वाद देता है।

⁵ बालिका वधू, 24 जुलाई एपिसोड 2008

⁶ बालिका वधू, 24 जुलाई एपिसोड 2008

⁴ बालिका वधू एपिसोड 2008 जुलाई 23

संध्या- (मास्टरनी) देखने के बाद कहती है कि ...आप तो कह रहे थे कि मैं आपका साथ दूँगा आप तो कह रहे थे चाइल्ड मैरिज एक्ट के तहत गिफ्तार करेंगे।

दारोगा - आपको सरकार ने पढ़ाने के लिए चयन किया है ना कि समाज की सेवा करने के लिए

संध्या- (मास्टरनी) आपको तो सरकार ने समाज की सेवा और कानून रक्षा करने के लिए बनाया है। अगर कोई सामाजिक बदलाव के लिए काम करता है नियम कानून बताया जाता है कि जो आप कर रहे हैं वही करें “जो रस्म कानून की मजाक उड़ाए हम ऐसे पाप क्यों कर रहे हैं.... सरकार ने जो नियम कानून बनाए हैं हम उसे क्यों तोड़ रहे हैं” एक तरफ गाँव समाज के नियम कानून तो दूसरे सरकार के नियम में संघर्ष देखने को मिलता है।

ग्रामीण आदमी 1 - शहर से चार किताब क्या पढ़ लिए, गुणी समझने लगती है... हमारे रीति – रिवाज में हस्तक्षेप करने वाली कौन होती है ...

ग्रामीण आदमी 2 - शहर की लड़की आज इसके साथ तो कल उसके साथ नयन मटाके लड़ाते फिरती रहती है।

ग्रामीण औरत 1- (गाँव की समाज उसी पर लांछन लगाना शुरू कर देता है)....पूरी विरादरी के सामने हमारी नाक –कान कटा दिया है” जब गाँव की महिला कहती है तो यह साबित होता है किस प्रकार से सामाजिक बनावट बनी है।

V/O कानून समाज को रक्षा करने के लिए बना है लेकिन वह समाज की रक्षा करने के बदले में घूस की परंपरा शुरू हो गई है। आपका साथ दे रहा हूँ तो आप को कुछ तो देना पड़ेगा। “दारोगा कहता है कि आप निश्चित रहे कोई बात नहीं होगी आप कुछ पैसा दे दीजिये सब ठीक हो जाएगा पैसा देकर तो अच्छे खासे लोग भी डिग जाते हैं” पैसा लेकर शिक्षिका को “पैसा लेने के बाद प्रशासन टीचर को ले जाकर उसे घर के कोठरी में बंद कर देती है ... बहुत रोब झाड़ रही थी.... दो पैसे की औकात नहीं है। देश की सेवा अभी सिखाता हूँ।

बालिका बधू 30 जुलाई 2008 एपिसोड

बाल विवाह हो जाने के बाद शिक्षिका मजिस्ट्रेट को लेकर आती है। बेलारिया गाँव के स्कूल शिक्षिका की संध्या जिला मजिस्ट्रेट बेलारिया गाँव आते हैं।

मजिस्ट्रेट- (पूछते हुए) क्या यहाँ पर किसी लड़की का बाल विवाह हुआ था।

संध्या- (बताते हुए) ये है माँ - बाप जो कानून के खिलाफ जाकर विवाह रचाया है।

मजिस्ट्रेट- (पूछते हुए) क्या कल किसी लड़की की शादी हुई है....

ग्रामीण समाज - गाँव वाले एक स्वर में कहते हैं कि किसी की शादी नहीं हुई है ...

मुख्या (प्रधान) - आप ही एक सच है... सभी झूठे हैं। आप तो बाढ़ के पानी के तरह फैलते जा रहे हैं। यह तो हम हजारों वर्ष से कुल देवी के हवन, पूजा पाठ, कराते हैं... कुलदेवी के खिलाफ अगर कोई जाएगा तो हम लोग कुछ भी करने के लिए तैयार हैं” देखा जाय तो अपने बहू-बेटियों को हम अपना गहना मानते हैं उसके खिलाफ कुछ भी कर सकते हैं... बहू-बेटियाँ पर्दे में रहती हैं। नुमाइश के लिए नहीं बनी है ...अगर गाँव के रीति- रिवाज के खिलाफ अगर जाता है तो गाँव वाले कुछ भी कर सकते हैं जैसे की जानते हैं “गाँव के खिलाफ वाले के गवाही मेरे तो हुक्का पानी बंद कर देंगे... वह गाँव के खिलाफ गवाही नहीं देता ”⁷।

1 अगस्त 2008 एपिसोड

V/O गाँव भले ही भिन्न-भिन्न समुदाय के लोग रहते हैं रीति –रिवाज या गाँव की अस्मिता का सवाल आता है तो वह कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाती है “शादी नहीं हुई ...सभी एक - एक गवाह नकार जाते हैं और शिक्षिका असफल हो जाती है ...जब भी बाल विवाह होता है सभी गाँव वाले एक ही सुर और ताल में बात करने लगते हैं यह एकता किसी भले काम के लिए नहीं होता है रूढ़िपन देखने को मिलता है “गाँव की पंचायत करते हैं कि उस मास्टरनी को क्या करना है। उसे रीति-रिवाज से कोई मतलब ही नहीं है। सरकार के सामने कितना छीछा लेदर हुआ है ...इतने मर्द सोच विचार कर रहे हमारे जमाने में तो महिला को बोलने का अधिकार ही नहीं था। आज वह समाज के लिए चुनौती बन गई है “गाँव वाले

⁷ बालिका बधू 30 जुलाई एपिसोड 2008

उसके घर पर आक्रमण कर देते हैं सब तोड़- फोड़ कर देते हैं ...देखते हैं कौन बचाने वाला होता है”⁸

शिक्षा

शिक्षिका से संघर्ष से “खौफ खाकर गाँव वाले घर के समान तोड़ देते हैं साथ ही स्कूल को जला दो, जब तुम लोग शिक्षा के मंदिर के तोड़ते आए हो... फिर क्या कर सकते हो”⁹ ...इस संवाद ने शिक्षा और समाज के यथार्थ देखने को मिलता है। जो व्यक्ति किसी सामाजिक संरचना हो या शिक्षा जिस तथ्य से परिचित नहीं है उसे उसका कोई मूल्य नहीं है।

2 अगस्त 2008 एपिसोड

V/O स्त्री जीवन संघर्ष से भरा पड़ा है तुझे आवाज बनाना ही पड़ेगा संघर्षों के रूप में “जब सब्जी खरीदने के लिए जाती है तो उसे सब्जी नहीं दी जाती है... थारो जैसे औरत को तो गाली भी ना दूँ तुम्हारे जैसे शहरी लोग हमारे जैसे लोग के बीच में आकर गंदगी फैलाते हैं” नाक नहीं कटनी है स्कूल भेज के आपके... जैसे नाक नहीं कटनी है ...चल चल यहाँ कोई यहाँ पानी नहीं है। पूरे गाँव में उसकी थू थू हो रही है”¹⁰। फिर भी हार नहीं मानती है संघर्ष करती रहती है।

विश्लेषण

गाँव में बाल विवाह होना बड़ी बात नहीं है। कारण यह है कि गाँव की जो नींव है गाँव की रीति-रिवाज और परंपरा में होती है। गाँव के भी मान-सम्मान की बात आने पर भले ही वह भिन्न-भिन्न जाति में हो लेकिन जब मान-सम्मान के लिए एक साथ खड़े दिखते हैं। जब संध्या बाल विवाह का विरोध करती है। जब वह बाल विवाह को रोकने के लिए कानून का सहारा लेती है। गाँव का हर व्यक्ति जानता है कि आनंदी की शादी हुई है लेकिन प्रशासन के पूछने के बाद गाँव के हर व्यक्ति यह कहता है कि यहाँ पर तो कोई शादी ही नहीं हुई है। गाँव का सरपंच कहता है कि आप तो पूरे गाँव का बदनाम करने पर तुली हैं। मेरे गाँव वाले तो खुद ही बाल विवाह के

खिलाफ काम कर रहे हैं। जब पूछा जाता है कि क्या यहाँ पर कल किसी लड़की की शादी हुई थी तो पूरे गाँव वाले कहते हैं कि किसी लड़की की शादी नहीं हुई है। तब सरपंच कहता है कि आप सही हैं और पूरे गाँव वाले झूठे हैं। आप तो बाढ़ के पानी की तरह फैल रही है। संध्या का कोई साथ नहीं देता है अंत में वह झूठी साबित होती है।

गाँव में बाल विवाह जैसी प्रथा क्यों सफल है? जब टीचर (संध्या) बाल विवाह का विरोध करती है तो गाँव का डाकिया यह कहता है कि आप इसका विरोध न करें। गाँव का खाप पंचायत आपको अनर्थ कर देगी फिर वह कहती है की बाल विवाह हो जाने के बाद बहुत सी बच्चियाँ हर साल मर जाती हैं। समाज का डर ही तो सब कुछ नहीं है। गाँव वाले अगर शादी कर देंगे तो हम घुट-घुट के मर जाएँगे। विरोध करने के उपरांत शादी हो जाती है। उसका साथ कोई नहीं देता है। डाकिया भी डर की वजह से नहीं कह पाता है कि हाँ लड़की की शादी हुई है। वह टीचर (संध्या) से कहता है कि अगर वह इन सबके खिलाफ अगर गवाही देंगे तो वह मेरे घर परिवार का हुक्का-पानी (कुजात) बंद कर देंगे। न घर के रहेंगे न घाट के। आखिरकार इस गाँव में ही जीना है।

संदर्भ सूची –

1. पाठक, कुमार, रवीन्द्र. (2010). जनसंख्या समस्या के स्त्री-पाठ के रास्ते. नई दिल्ली : राधा कृष्ण. पृष्ठ संख्या 72.
2. कालिया .रवीन्द्र .(2011). इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की चुनौतियाँ, नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ. पृष्ठ संख्या 72.
3. पाण्डेय, डॉ रामसकल .(2005). शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या- 381
4. सिन्हा सिंह, डॉ हिममत. (1990). संस्कृति दर्शन. चंडीगढ़: हरियाणा साहित्य अकादमी, पृष्ठ संख्या -132
5. गुप्ता, डॉ सीताराम. (2008). पारिवारिक समाजशास्त्र साहित्य दर्पण में. हाथरस: सीता प्रकाशन -पृष्ठ-36
6. कुरुक्षेत्र नवंबर, 1992, पृष्ठ-25
7. बालिका वधू 31 जुलाई 2008 एपिसोड
8. बालिका वधू 1 अगस्त 2008 एपिसोड
9. बालिका वधू 2 अगस्त 2008 एपिसोड
10. बालिका वधू 24 जुलाई 2008 एपिसोड

⁸ बालिका वधू 31 जुलाई एपिसोड 2008

⁹ बालिका वधू एपिसोड 2008 अगस्त 1

¹⁰ बालिका वधू 2 अगस्त एपिसोड 2008